आज का पुरुषार्थ 27 July 2022

<u>Source</u>: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" चले सम्पूर्णता के ओर .. स्वयं को पहचाने .. स्वदर्शन चक्रधारी बन, विकार पर विजय प्राप्त करे "*

सर्वशक्तिमान उस्ताद आकर जो हमारा परम सदगुरू है हमें माया से युद्ध कराते है और इस **माया पर विजय** प्राप्त कराते है।

माया से युद्ध कराने के लिए वो हमें अपनी **शक्तियाँ** भी देते है और ज्ञान के दिव्य अस्त्र शस्त्र भी देते है। **प्युरीटी का बल भी देते है।**

हम याद रखें हम युद्ध के मैदान में है। और एक पहले से ही निश्चित बात जो हमारे नशे में रहनी चाहिए के ...

" विजय हमारी ही होनी है .. कल्प कल्प हमारी ही विजय हुई है "

तो सेनायें जब लड़ती है आपस में और एक को पता हो कि ... " *जीत हमारी ही होंगी* "

.. तो उनके लड़ने का उमंग उत्साह और बल अनूठा ही रहेगा।

हमें भी पहले से ही बाबा ने बता दिया है ...

" जीत तुम्हारी ही है .. क्योंकि मैं तुम्हारे पीछे हूँ "

हम स्वयं को महावीर भी समझें, विजयी रतन भी समझें और ईश्वरीय शक्तियों से सम्पन्न भी समझें।

.. रोज सवेरे यह तीनों स्मृति का तिलक स्वयं को दिया करे ...

" मै युद्ध के मैदान में हूँ .. मुझे माया को परास्त करना है .. मैं महावीर हूँ .. मैं विजयी रतन हूँ .. मैं ईश्वरीय शक्ति से सम्पन्न हूँ "

साथ साथ ..

" सारे दिव्य शस्त्र ज्ञान के मेरे पास है .. स्वदर्शन चक्र मेरे पास है "

भक्ति में दिखाया है **सुदर्शन चक्र** कृष्ण के पास था। कोई भी उसका सामना कर ही नहीं सकता था। जब चाहे सुदर्शन चक्र चला के अपने शत्रु को नष्ट कर देते थे।

हम भी स्वदर्शन चक्र के द्वारा इतने **शक्तिशाली** बन जाते है के माया शत्रु हमारे सामने आने का साहस ही नहीं कर सकता।

तो काम को जीतना है, सबसे बड़ा युद्ध **काम** के विरूद्ध है। फिर **क्रोध** के विरूद्ध है। और फिर **अहंकार** के विरुद्ध है। बाकी तो सब छोटे छोटे सैनिक है। उन्हें तो सहज जीता जा सकता है।

जो काम को जीत ले उसकी क्रोध पर भी विजय निश्चित हो जाती है। अहंकार की भी उसको deep realisation हो जाती है। और वह मनुष्य **स्वमान** के द्वारा अपने अभिमान पर भी विजय पा लेता है।

इसलिए किसी किसी को इस **काम वासना** को जीतना कठिन लगता है। परन्तु , हमारे पास →

पहला ज्ञान का शस्त्र है ..

" हम देवकुल की पवित्र आत्मायें है "

दुसरा ..

" हम सुप्रीम सोल है .. सम्पूर्ण पवित्र है "

" उसकी संतान परम पवित्र आत्मायें है "

" मैं आत्मा पवित्र संस्कारों से युक्त रही हूँ हजारों साल .. मेरे अंदर प्युरीटी की संस्कार है "

" यह देह तो मुझे एक वस्त्र के तरह ही मिला है .. मैं तो इससे भिन्न एक चैतन्य पवित्र स्वच्छ आत्मा हूँ .. निर्विकारी हूँ "

यह फीलिंग दे अपने को रोज़। सवेरे उठते ही अपने को एक गुड फीलिंग देनी है ..

" मैं बहुत पवित्र हूँ .. देवकुल की महान आत्मा हूँ "

पानी चार्ज करके भी पीना है ..

" मैं परम पवित्र आत्मा हूँ "

कर्मेन्द्रियों को भी शीतल करना है। कर्मेन्द्रियों में भी जो विकारों की अग्नि प्रज्वलित हो रही है, इसका प्रभाव मन पर आ जाता है और मन uncontrolled हो जाता है ... उस पर भी हमें **विजय** पानी है।

इसलिए चार्ज करके पानी पीना है। भोजन भी पवित्र खाना है। बाबा की याद में ...

" मैं परम पवित्र हूँ "

.. इस स्मृति में बाबा को अपने पास बुलाकर यदि हम भोजन ग्रहण करेंगे .. तो यह भोजन हमें पवित्र बनने में बहुत मदद करता है।

इन सब चीजों पर बहुत ध्यान देंगे।

तो आज सारा दिन अभ्यास करेंगे ...

" मैं पवित्रता का सूर्य हूँ .. परमधाम में है पवित्रता के सागर .. उनकी पवित्र किरणें निरन्तर मुझमें समा रही है .. और मेरे से चारों ओर प्युयोर वायब्रेशन्स फैल रहे है "

|| ओम शान्ति ||

BK Google: www.bkgoogle.org	**Website**: www.shivbabas.org